eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

गांधी के शिक्षा दर्शन के संदर्भ में नई शिक्षा नीति 2020 को चुनौतियां एवं संभावनाएं

[1]डॉ० राजेश सिंह

[1]सहायक प्रवक्ता, लाला महादेव प्रसाद वर्मा बालिका महाविद्यालय, गोसाईगंज लखनऊ।

Abstract

वर्तमान की जड़े अतीत में छुपी होती हैं। भारत के पास एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत रही है। गाँधी का शिक्षा दर्शन इसी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर पुष्पित और पल्लवित हुआ। किसी भी देश की शिक्षा नीति, शिक्षा की नवीन दृष्टि एवं शिक्षा की व्यापक योजना होती है। इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य यह है कि नयी शिक्षा नीति 2020, गाँधी के शिक्षा दर्शन से कितनी प्रभावित है और किन संदर्भों में यह नीति अलग है।

संकेत शब्द :– गांधी का शिक्षा दर्शन, नई शिक्षा नीति, शिक्षा, चुनौतियां एवं संभावनाएं ।

Introduction

शिक्षा व्यक्ति एवं समाज के विकास का एक माध्यम है। भारत के पास एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत रही है। इस विरासत का अभिन्न अंग ज्ञान रहा है। गांधी को भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर गर्व था उनका पूर्ण विश्वास था कि शिक्षा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित होना चाहिए। भारतीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा ही मानव को पाश्चात्य सभ्यता एवं मशीनीकरण से मुक्त कर सकती हैं। गांधी एक नए भारत का निर्माण करना चाहते थे। जो पूर्ण रूप से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित हो गांधी को स्पष्ट ज्ञान था कि शिक्षा के माध्यम से ही हम नये भारत का निर्माण कर सकते हैं। गांधी के शैक्षिक विचारों को वर्धा शिक्षा योजना 1937 में सम्मिलित किया गया। साधारणतया हम गांधी के शैक्षिक विचारों का अर्थ केवल वर्धा शिक्षा योजना या नई तालीम या बुनियादी शिक्षा से ही समझते हैं। लेकिन यह पूर्ण सत्य नहीं हैं। गांधी ने विभिन्न पत्रिकाओं,भाषण, वार्तालापों एवं पत्रों के माध्यम से शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। शिक्षा पर उन्होंने अपने आश्रम में प्रयोग भी किए थे। गांधी का शिक्षा दर्शन तात्कालिक समाज की आवश्यकताओं के अनुसार था स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार शिक्षा के विकास, प्रचार एवं प्रसार के लिए समय–समय पर विभिन्न शिक्षा नीति लेकर आई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार शिक्षा के विकास, प्रचार एवं प्रसार के लिए समय–समय पर विभिन्न शिक्षा नीति लेकर आई। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948, माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952, भारतीय शिक्षा आयोग 1964–1966, नई शिक्षा नीति 1968, 1992 नईशिक्षा नीति 1992, शिक्षा नीति 1986 का ही संशोधन रूप थी। नई रक्षा नीति 1992 में नई शिक्षा नीति 1986 के अधूरे काम को पूरा करने का प्रयास किया गया था । निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009, पिछली नीति 1986, 1992 के बाद है इस अधिनियम द्वारा सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा सुलभ कराने हेतु कानूनी आधार उपलब्ध कराया गया था। इसी क्रम में भारत सरकार नई शिक्षा नीति 2020 लेकर आयी। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनमोदित किया गया। प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक के साथ–साथ ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए व्यापक ढांचा है। नीति का लक्ष्य 2040 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है। शिक्षा नीति के कुल 4 भाग 1 प्राथमिक शिक्षा भाग 2. उच्चतर शिक्षा, भाग 3 अन्य केंद्रीय विचारणीय मुद्दे, भाग 4 क्रियान्वयन की रणनीति है । इस दस्तावेज की व्याख्या 107 पृष्ठों में की गई। इस शिक्षा नीति के मुख्य सिद्धांत है– प्रत्येक बच्चे की विशिष्टि क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना, बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना, लचीलापन, कोई स्पष्ट अलगाव ना होना, सभी ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिचित करने के लिए एक बहुविष्यक दुनिया के लिए विज्ञान, एक बहु विषयक और समग्र क्षा का विकास, अवधारणात्मक समझ पर जोर, रचनात्मक और तार्किक सोच नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य, बहुभाषिकता एवं भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन, जीवन कौलश, सीखने के लिए सतत मूल्यांकन पर जोर, तकनीक के यथासंभव उपयोग पर जोर, विविध और स्थानीय परिवेश क लिए एक सम्मान, सभी शैक्षिक निर्णयों की आधारशाला के रूप में पूर्ण समता और समावेषन, प्रशिक्षको और संकाय को सीखने की प्रक्रिया का केन्द्र मानना, अखंडता, पारदर्शिता और संसाधन कुशलता, हल्का लेकिन प्रभावी नियामक ढांचा, स्वायत्ता और साक्तिकरण, उत्कृष्टता स्तर का शोध एवं भारतीय जडों और गौरव से बने रहना। यह शोध पत्र मुख्य रूप से नई शिक्षा नीति 2020 के प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा पर ही केंद्रित हैं।

स्वावलंबी शिक्षा :– गांधी शिक्षा को स्वालंबी बनाना चाहते थे। मैं शिक्षा को स्वालंबी इस तरह बनाना चाहता हूं कि बच्चे राज्य से जो शिक्षा प्राप्त करते हैं उसका आंगिक मुआवजा वे खुद ही कमा करके चुका दें (खंड–66 पृष्ठ–130)। गांधी शिक्षा के माध्यम से बालकों का मानसिक विकास करना चाहते थे। शारीरिक श्रम के द्वारा ऐसी चीजों का उत्पादन होना चाहिए। जो बाजार में बिक सकती हो (खंड–66, पृष्ठ–130)। राज्य का यह उत्तर दायित्व होगा कि वह बच्चों द्वारा बनाई चीजों को खरीदे और उसके लिए बाजार ढूंढे। बच्चों को ऐसी चीज सिखाई जाए जो वास्तव में उपयोगी हो। गांधी को बाल मजदूरी और उद्योग के माध्यम से शिक्षा का अंतर भली–भांति स्पष्ट था। इसीलिए उन्होने कहा कि पुराने जमाने के कारखानों में जिस तरह मार के भय से बच्चे काम करते थे। उस तरह हमारे बच्चे ये काम नहीं करेंगे। वे इसीलिए करेंगे कि इससे उनका मनोरंजन होता है और उनकी बुद्धि को उत्तेजना मिलती है। (खंड – 66, पृष्ठ–130)। अब प्रश्न उठता है कि वह कौन सी उद्योग होंगे जिसकी शिक्षा बच्चों को सर्वप्रथम दी जाए । इसके उत्तर में गांधी का कहना था कि शिक्षा का माध्यम कोई भी ग्रामोपयोगी उद्योग होना चाहिए (खंड–66, पृष्ठ–167, हरिजन बंधु – 19–9–1937) गांधी जो का विश्वास था कि बच्चों को शल्प, कताई, बुनाई, दस्तकारी, माड लगाना, रंगाई, कागज काटना, जिल्द साजी, नमूने बनाना इत्यादि उद्योगों का प्रक्षण दिया जाना चाहिए। गांधी का मानना था कि राज्य 7 से 14 वर्ष के बच्चों को अपने पत्रों को अपने अधिकार में लेकर कोई उत्पादक श्रम द्वारा उनके मन और बुद्धि का विकास करें। गांधी से लोगों ने अपने पत्रों के माध्यम से पूछा कि शिक्षा स्वावलंबी क्यों होनी चाहिए। इस कच्ची उम्र में बच्चों को केवल पढ़ना लिखना चाहिए। गांधी ने इसका उत्तर देते हुए कहा कि, यह उसकी उपयोगिता की कसौटी होगी। 14 वर्ष की उम्र होने, अर्थात 7 वर्ष की रक्षा क्रम समाप्त करने के बाद जब विद्यार्थी स्कूल छोड़कर जाए तब उसे कुछ कमा सकने योग्य होना चाहिए

(खंड–66, पृष्ठ–152) गांधी देश की वास्तविक परिस्थितयों से भली भांति परिचित थे। गांधी को ज्ञान था कि कि अभी देगा की अधिकाश जनता बहुत गरीबी में हैं। इसलिए जब बालक 7 वर्षीय शिक्षा

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

लेकर निकले तो वह एक कमाऊ इकाई के रूप में अपने परिवार में सम्मिलित हो सके। विद्यार्थियों के अंदर भी यह भाव होता है कि यदि वह कुछ नहीं कमांएगे तो उनका परिवार क्या खाएगा। यह स्वयं में ही एक शिक्षा है (खंड–66, पृष्ठ–152) ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी उद्योग परक अवधारणा का समावेश प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर किया गया है। भाग 2, अध्याय 16 विषय व्यवसायिक शिक्षा का नवीन आकल्पन पृष्ठ 70–72. बिंदु 16.1168 में किया गया है। बिंदु 16.4 में स्पष्ट रूप से कहा गया है, कि इस नीति का उद्देश्य व्यवसायिक शिक्षा से जुडी सामाजिक पदानुक्रम की स्थिति को दूर करना है, और इसके लिए आवश्यक होगा कि समस्त प्रशिक्षण संस्थान, जैसे– स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, चरणबद्ध तरीके से व्यवसायिक शिक्षा के कार्यक्रम को मुख्यधारा के शिक्षा में एकीकृत करें, और इसकी शुरुआत आरंभिक वर्षो में व्यवासायिक शिक्षा तक जाए। इस तरह से व्यवसायिक शिक्षा को एकत्रित करना यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक बच्चा कम से कम एक व्यवसाय से जुडे कौशलों को सीखे और अन्य कई व्यवसायों से इस प्रकार परिचित हो ऐसा करने के परिणाम स्वरुप वह श्रम की महत्ता और भारतीय कलाओं और कारीगरी सहित अन्य विभिन्न व्यवस्थाओं के महत्व से परिचित होगा।

गांधी के विचारों में लचोलपन था इसलिए उन्होंने माना कि राज्य अपनी सुविधा अनुसार इस अवधि को कम या अधिक कर सकती है। 7 वर्ष मेरी योजना का अनिवार्य अंग नहीं है, हो सकता है कि मेरे द्वारा निर्धारित बौद्धिक स्तर पर पहुंचने के लिए इससे भी ज्यादा समय की जरुरत हो (खंड–66. पृष्ठ–159)। नई शिक्षा नीति 2020 में भी लचीलापन है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग–1 स्कूल शिक्षा पृष्ठ–8 में वर्णन है कि, यह नीति वर्तमान की 10़2 वाली स्कूल व्यवस्था को 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और प्रशिक्षण शास्त्री आधार पर 5़3़4 की एक नई व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात करती है।

शिक्षा का माध्यम :– वर्तमान की जडे अतीत में छुपी होती है। इसलिए हमें अपने अतीत पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अपने अतीत को सहेज कर ही हम अपनी संस्कृति को आगे आने वाली पीढ़ी को स्थानांतरित कर सकते हैं। गांधी को अपनी सभ्यता एवं संस्कृति पर गर्व था। गांधी शिक्षा के माध्यम से अपनी सभ्यता और संस्कृति को सहेजना चाहते थे। वह चाहते थे कि शिक्षा भारतीय मूल्यों और परंपराओं के अनुसार ही हो। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पाचात्य मूल्यों पर आधारित है। इसलिए इस शिक्षा व्यवस्था को बदल कर हमें अपनी संस्कृति के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। वह चाहते थे कि शिक्षा भारतीय मूल्यों और परंम्पराओं के अनुसार ही हो। इसलिए इस शिक्षा व्यवस्था को बदल कर हमें अपनी संस्कृति के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करना चाहिए इस शिक्षा नीति में भी गांधी के इन्हीं विचारों को सम्मिलित करते हुए भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है एवं इसके साथ–साथ आधुनिक विषयों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। गांधी का मानना था कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा होनी चाहिए भाषा केवल विचारों को ही नहीं बल्कि अपनी संस्कृति को भी समझने का माध्यम है। नई शिक्षा नीति 2020 के भाग–1 स्कूल शिक्षा, अध्याय 4. विषय स्कूलों में पाठ्यक्रम अधिगम समग्र एकीकृत आनंददायी और रुचि का होना चाहिए. शीर्षक बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति, पृष्ठ–19, बिन्द–4.11 में जहां मक संभव हो, कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा कि यहां ग्रेड 8 और उसे आगे हो शिक्षा का माध्यम घर की भाषा, मातृभाषा स्थानीय भाषा और क्षेत्रीय भाषा होगी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

मूल्यपरक शिक्षा :– गांधी की भारतीय मूल्यों और संस्कृतिक पर अटूट आस्था थी वे भारतीय सांस्कृ तिक मूल्य के द्वारा ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास करना चाहते थे गांधी ने मूल्य शिक्षा समर्थन करते हुए कहा कि मैं शिक्षा के साहित्यिक पहलू की तुलना में उसके सांस्कृतिक पहलू को नहीं अधिक महत्व देता हूं (हरि.5–5–1946. पृष्ठ–120)। नई शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 स्कूल शिक्षा, अध्याय 4 विषय स्कूलों में पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण अधिगम समग्र एकीकृत आनंददायी और रुचिका होना चाहिए. शीर्षक विद्यार्थियों का समग्र विकास, पृष्ठ 17 बिंदु 4.4 में पूर्व विद्यालय से उच्चतर शिक्षा तक प्रत्येक स्तर में एकीकरण के लिए विभिन्न

1.क्षेत्रों में विष्टि कील और मूल्यों की पहचान की जाएगी। प्रशिक्षण और अधिगम प्रक्रिया में इन की लऔर मूल्यों को आत्मसात किया जा रहा है। यह सुनिचित करने के लिए पाठ्यक्रम ढांचा और संपर्क तंत्र विकसित किया जाएगा।

व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास :– गांधी का पूर्ण विवास था कि मानव केवल हाड मांस का पुतला नहीं है, बल्कि उसमें आत्मा का भी निवास है। गांधी उद्योगपरक शिक्षा के माध्यम से बच्चों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना चाहते थे गांधी का कहना था कि सब तरह से देखते हुए एक या अनेक उद्योग लड़के अथवा लड़की के सर्वांगीण विकास के लिए सबसे अच्छे साधनों में से हैं, और इसलिए सारा पाठ्यक्रम उद्योग प्रशिक्षण को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए (खंड–66, पृष्ठ–159. हरिजन 18.9.1937) नई शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 स्कूल शिक्षा अध्याय 4 विषय– स्कूल में पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण, अधिगम समग्र एकीकृत आनंददायी और रुचिका होना चाहिए. शीर्षक विद्यार्थियों का समग्र विकास पृष्ठ– 17 बिन्द44 में शिक्षा का उद्दे''य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण आर इक्कीसवीं शताब्दी के मुख्य कील से सुसज्जित करना है। उत्तरदायित्वपूर्ण एवं गतिशील नागरिकों का निर्माण :–

गांधी शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का एक माध्यम मानते थे विद्यार्थियों को जानना चाहिए कि राष्ट्रीय भावना को विकसित करना कोई अपराध नहीं है, बल्कि एक सदगुण है (खंड–66, पृष्ठ–57, हरिजन 18.9.1937) इस शिक्षा नीति का उद्देय भी प्रत्येक स्तर पर विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भावना एवं प्रेम की भावना का विकास करना है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रावधान इस शिक्षा नीति में किए गए हैं कुछ प्रावधान सैद्धांतिक है और कुछ प्रावधान व्यावहारिक है। गांधी का मानना था कि अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व सरकार का है। मेरी मान्यता है कि शिक्षा अनिवार्य और मुफ्त होनी चाहिए (खंड–66, पृष्ठ–185, हरिजनबन्धु 26.9.1937)। नई शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 स्कूल शिक्षा, अध्याय 1 विषय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पूर्वर्ति, पृष्ठ–78 बिंदु–22 में शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक विद्यालय में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना होगा सीखने की बुनियादी आव'' यकता (अर्थात मूलभूत स्तर पर पढ़ना लिखना और अंकगणित) को हासिल करने पर ही हमारे विद्यार्थियों के लिए बाकी नीति प्रसांगिक होगी। इस शिक्षा नीति में सार्वभौमिक कक्षा पर बल दिया गया है उसे प्राप्त करने का महत्वपूर्ण लक्ष्य रखा गया है।

संगीत कला और शिक्षा :– गांधी केवल उद्योग ही नही बल्कि संगीत और चित्रकला की शिक्षा दिए जाने के पक्षधर थे। लड़के लड़कियों के भीतर जो अच्छाइयां भरी रहती है. उन्हें बाहर लाने और पढ़ाई में भी उसकी सच्ची दिलचस्पी पैदा करने के लिए कवायद उद्योग, चित्रकारी और संगीत साथ–साथ सिखाये जाने चाहिए (खंड–66. पृष्ठ– 134) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 1. स्कूल

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

शिक्षा, अध्याय 4. विषय स्कूलों में पाठ्यक्रम और अधिगम समग्र एकीकृत आनंददायी और रुचिका होना चाहिए

शीर्षक– बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति, पृष्ठ 22, बिंद– 4.21, में सभी भाषाओं के क्षण को नवीन और अनुभवात्मक विधियों के माध्यम से समृद्धि किया जाएगा, जिसमें सरलीकरण और एप्स के माध्यम से. भाषाओं के सांस्कृतिक पहलुओं जैसे की फिल्म थिएटर, कथा वाचन काव्य और संगीत को जोड़ते हुए और विभिन्न प्रसांगिक विषयों के साथ और वास्तविक जीवन के अनुभव के साथ संबंधों को दिखाते हुए इन्हें सिखाया जाएगा। इस प्रकार, भाषाओं का प्रशिक्षण भी अनुभववात्मक अधिगम शिक्षण शास्त्र पर आधारित होगा।

चुनौतियां :– गांधी ने तात्कालिक समाज की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा का ठोस ढांचा तैयार किया था। उस समय तात्कालिक समाज की मुख्य चुनौती केवल स्वतंत्रता प्राप्ति करना ही नहीं था, बल्कि समाज में व्याप्त गरीबी एवं बेरोजगारी से लड़ना भी था। इसके साथ ही उपलब्ध मानवी एवं प्राकृतिक संसाधनों का सर्वोत्तम दोहन करते हुए विकास की राह को प्रास्त करना था। गांधी ने प्राथमिक शिक्षा को उद्योग से जोडा और साथ ही इस बात पर विशेष बल दिया कि बच्चे पढ़ते हुए कुछ धनार्जन कर सके। इसके लिए व्यापक 8 ठोस योजना बनाई थी। गांधी का कहना था कि पाठशाला 5 घंटे चले उसमें 4 घंटे मजदूरी के होने चाहिए और बाकी से 1 घंटे में जो उद्याग सिखाया जाता हो उसके साथ तात्विक ज्ञान और अन्य विषयों की जा उद्योग सिखाते समय ना सिखाए जा सकते हो– शिक्षा दी जानी चाहिए (खंड 66 पृष्ठ–167, हरिजनबन्धु 19–9–1937) । इस शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा को उद्योग से तो जोडा गया, लेकिन बच्चे उद्योग के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते हुए कुछ धनार्जन करते रहें इसकी व्यवस्था शिक्षा नीति में नहीं है।

गांधी का मानना था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती हैं। इसलिए उनकी शिक्षा व्यवस्था ग्राम प्रधान थी। गांधी की शिक्षा व्यवस्था में ग्राम प्रधान उद्यागों की प्रधानता थी। गांधी का कहना था कि आप शहरो को भूल जाइये एवं गाँवों पर अपनी शक्ति केंद्रित कीजिए। यह समुद्र हैं। शहर तो इस सिंधु में एक बूँद के समान हैं। यही वजह है कि आप ईंट बनाने जैसे विषय की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। अगर वे सिविल एवं मैकेनिकल इंजीनियर ही होना चाहेंगे तो वे सात वर्ष की शिक्षा खत्म करने के बाद इन उच्च एवं खास विषयों के लिए बने हुये खास कॉलेजों में चले जाएंगे (खंड–66, पृष्ठ–152, हरिजन, 18.9.1937) गांधी बहुत ही हीन समझे जाने वाले उद्योग जैसे मोची का काम, धागा काटना इत्यादि को भी शिक्षा में सम्मिलित किया जिससे इन उद्योगो की गरिमा को पुनः स्थापित किया जा सके। इस शिक्षा नीति में शिक्षा की सार्वभौमिक व्यवस्था तो की गई है, लेकिन विष रुप से ग्राम प्रधान उधोगो पर अधिक बल नही दिया गया है।

गांधी शिक्षा के साथ–साथ विद्यालयों को भी स्वावलंबी बनाना चाहते थे। शिक्षा समग्र रुप से स्वावलंबी होनी चाहिए। तात्पर्य यह है कि पहले के एक दो वर्षों में यह भले ही स्वावलंबी ना हो लेकिन सात वर्षो के अंत में आमदनी और खर्च समान होने चाहिए (खंड–66, पृष्ठ–167, हरिजनबंधु, 19. 9.1937)। इस शिक्षा नीति में स्वावलंबी शिक्षा व्यवस्था पर तो बल दिया गया है, लेकिन स्वावलंबी विद्यालयों पर ध्यान नहीं दिया गया है। देश के सीमित संसाधनों के कारण ही गांधी का मत था कि एक ही विद्यालयों में कई उद्योगों का प्रक्षण नहीं दिया जाए, बल्कि एक विद्यालय में एक उद्योग और दूसरे विद्यालय में दूसरे उद्योग का प्रशिक्षण दिया जाए। उद्योग के लिए अलग से अध्यापक नियुक्त

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

करने से अच्छा है कि हम पहले से ही नियुक्त अध्यापकों को ही उद्योग का प्रशिक्षण देकर उन्हें बच्चों को शिक्षा देने योग्य बनाएं। इस शिक्षा नोति में गांधी के कई महत्वपूर्ण विचारों को सम्मिलित किया गया है। लेकिन गांधी विचारों का एक समुद्र थे। इसलिए इस शिक्षा नीति में गांधी के और विचारों को अपनाए जाने की आव श्यकता है।

निष्कर्ष :– गांधी अपने सपनों का भारत बनाना चाहते थे। इस पर इस परिपेक्ष्य से यदि देखा जाए तोराष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और गांधी के व्यावहारिक शिक्षा दर्शन के बहुत से सिद्धांतों में समानता है। गांधी देश के लिए एक व्यावहारिक शिक्षा दर्शन लेकर आए जो ग्रामीण जनसंख्या को ध्यान में रखकर उद्योग पर आधारित था। इसके साथ उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, कला, संगीत, को भी अपनी शिक्षा व्यवस्था में सम्मिलित किया गांधी ना केवल शिक्षा को बल्कि शैक्षिक संस्थाओं को भी आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे गांधी अपने व्यवहारिक रिक्षा दर्शन के माध्यम से भारत की एक बहुत बडी समस्या जातिवाद की समस्या का भी समाधान करना चाहते थे वर्ण व्यवस्था जिसने शनेःशैने जाति व्यवस्था का रुप ले लिया। वर्णाश्रम की विशाल विकृति के कारण हम लोग कतैयों जुलाहो, बढ़ई और मोचियों को नीची जाति का और सर्वहारा समझने लगे दस्तकारियों को कील से रहित नीचे दर्जे की कोई चीज समझने के बुरे रिवाज के कारण ही हमारे यहां कॉम्पटन एवं हपरग्रीव्ज जैसे आविष्कारक पैदा ना हो सके (खंड 66. पृष्ठ 152, हरिजनबंधु 18–9–1937) गांधी का मत था कि भारत जहां की आधे से अधिक आबादी गाँवों में रहती हैं और अक्षित है। यहाँ पर जातिवाद व्यवस्था के कारण जो कर्म निम्न जाति के लोग द्वारा किए जाते है. जैसे जूता बनाना, ईंट पाथना, कताई बुनाई आदि इन कामो को शिक्षा में सम्मिलित कर के हमे इन कर्मों की पुनः स्थापना करनी होगी। गांधी की तरह इस शिक्षा नीति में भी सामाजिक पदानुक्रम की स्थिति में बदलाव एवं सामाजिक पदानुक्रम की स्थिति से जुड़े कर्मों के प्रति भेदभाव को कम करने का प्रयास किया गया है। गांधी ने देश सेवा को नवीन प्रकार से परिभाषित किया। उनका मानना था कि जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं. उसका मूल्य श्रम के रूप में चुकाना भी एक प्रकार से देगा सेवा है (खंड–66, पृष्ठ–137) गांधी अपने वह व्यावहारिक निक्षा दर्शन द्वारा गरीबी और बेकारी की समस्या का अंत करना चाहते थे उनका मानना था कि यदि हम आरम्भ से ही बच्चों को उद्योग की शिक्षा देते हैं तो वह कुछ कमाने योग्य हो जाएगें और उसके परिवार की गरीबी भी कुछ कम हो जाएगी एक छोर पर भुखमरी और दूसरे छोर पर जो अमीरी चल रही है वह मिट जाएगी और दोनों का मेल सधेगा एवं विग्रह तथा खून खराबी का जो भय है हमको हमें लगा रहता है वह दूर होगा (खंड–66, पृष्ठ–185, हरिजनबंधु 26–9–1937)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गांधी के सपनों का भारत बनाने के लिए कई प्रकार से योगदान देती हैं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर उद्योग आधारित कौलों के विकास पर बल दिया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 के भाग 1. स्कूल शिक्षा, अध्याय 4 विषय स्कूलों में पाठ्यक्रम और ''क्षण'' शास्त्र अधिगम समग्र एकीकृत आनंदायी और रुचिका होना चाहिए. पृष्ठ 23 शीर्षक 'अनिवार्य विषयों को''ालों और क्षमताओं का शिक्षाक्रमीय एकीकरण बिंदु 4.23 में कौशलों और क्षमताओं के उपयोगी पर बल दिया गया है। प्रत्येक बच्चे के पास अपना अद्वितीय व्यक्तित्व, कॉल. क्षमता एवं रुचि होती है। प्रत्येक बच्चे का यह अधिकार है कि वह स्थानीय संसाधनों का निम्नतम प्रयोग कर अपने कौशल, क्षमता एवं व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास करें कील एवं क्षमता का सर्वोत्तम विकास करके ही व्यक्ति को आत्मनिर्भर एवं आत्मविवास से परिपूर्ण बनाया जा सकता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

गांधी ने अपने समय के उद्योग को शिक्षा में सम्मिलित किया। उसी प्रकार से इसे शिक्षा नीति में भी वर्तमान समय की आवश्यकता ध्यान में रखते हुए आधुनिक कालों को शिक्षा में सम्मिलित किया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 स्कूल क्षा, अध्याय 4. विषय स्कूलों में पाठ्यक्रम और क्षमताओं का शिक्षाक्रमीयएकीकरण पृष्ठ 23. बिंदु 4.24 में प्रासंगिक चरणों में समसामयिक विषयों जैसे

आर्टिफियल इंटेलिजेंस, डिजाइन थिंकिंग, हॉलिस्टिक हेल्थ ऑर्गेनिक लिविंग, पर्यावरण शिक्षा, विक नागरिकता शिक्षा आदि जैसे समसामयिक विषयों की शुरुवात सहित सभी स्तरों पर छात्रों में इन विभिन्न महत्वपूर्ण कीलो को विकसित करने हेतु समुचित शिक्षाक्रमीय और शिक्षण शास्त्रीय कदम उठाए जाएंगे। बिंदु 4.25. में मिडिल स्कूल स्तर पर कोडिंग संबंधी गतिविधियां शुरु की जाएगी। बिंदु 4.26 में कक्षा 6 से 8 में पढ़ने के दौरान सभी विद्यार्थी एक 10 दिन के बस्ता रहित पीरियड में भाग लेंगे। जब वे स्थानीय व्यवसायिक विशेषज्ञों जैसे माली, कुम्हार कलाकार आदि के साथ प्रक्षु के रूप में काम करेंगे। इसी तर्ज पर कक्षा 6 से 12 तक छुट्टियों के दौरान भी विभिन्न व्यवसायिक विषयों समझने के लिए अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं यह शिक्षा नीति पुरानी शिक्षा नीतियों से भिन्न हैं। इस भिन्नता का मुख्य कारण यह है कि शिक्षा नीति में प्रयोगिक कार्यो पर विशेष बल दिया गया है जो इस शिक्षा नीति को पुरानी शिक्षा नीतियों से अलग करती है। इस शिक्षा नीति में प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को सैद्धांतिक शिक्षा के साथ–साथ व्यवहारिक शिक्षा देने पर बल दिया गया है। इस शिक्षा नीति के पाठ्यक्रम में विशेष रुप से प्रयोगात्मक कार्य एवं सामुदायिक कार्यों के लिए कार्य घंटे सुनिचित किए गए हैं। यह इस शिक्षा नीति की मुख्य विशेषता है। प्राथमिक शिक्षक, व्यवस्था की नींव होती है। गांधी और इस शिक्षा नीति दोनों का उद्देश्य प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास करना है. इसके साथ ही विद्यार्थी अपने कोल के सर्वोत्तम विकास द्वारा देश के विकास में योगदान दे सकें।

सन्दर्भ सूची–

1. एम. के. गांधी एन इंडियन पेट्रियट इन साउथ अफ्रीका लेखक– जे.जे. डोक प्राक्कथन लार्ड एम्प्टहिल द लंदन इंडियन क्रोनिकल, लंदन, 1990 एम. के. गांधी. द कॉलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी इन हिंदी (वोल्यूम 1 से 97) इम्पोर्टेन्ट बुक्स.
2. प्रथम बार प्रकाशित गांधी जी द्वारा संपादित और अहमदाबाद से प्रकाशित बोरमन, विलियम, गांधी एंड नॉन–वायलेंस एल्वं स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क प्रेस 1986, रिपोर्ट ऑफ गवरमेंट ऑफ इंडिया, मिनिस्ट्री ऑफ हयूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट ने'' निल एजुकेशन पॉलसी 2020
3. हरिजन (1933–1956) गांधी जी द्वारा संस्थापित अंग्रेजी साप्ताहिक, हरिजन सेवक संघ, पूना के तत्वावधान में प्रकाशित और 1942 से नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान इसका प्रकाशन स्थगित रहा. जनवरी 1942 में प्रकाशान पुनः आरम्भ हुआ, पर भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बंद हो गया। 1946 से फिर प्रकाशित होना आरम्भ हुआ।
4. हिन्द स्वराज और इंडियन होम रूलः महात्मा गांधी नवजीवन पब्लिपिंग हाउस, अहमदाबाद, 1938